प्रकाशकीय

आलोचना का अर्थ है - अपनी भूलों का प्रकट उच्चारण या निवेदन। प्रतिक्रमण का अर्थ है - अकरणीय को पुनः नहीं करने का संकल्प अथवा अतीत की भूलों के लिए मिथ्या-दुष्कृत का प्रयोग। आराधना आत्मालोचन एवं प्रतिक्रमण का पवित्र अनुष्ठान है, जिसको पूज्य दादा सा. ने विशुद्ध आध्यात्मिक चर्या के प्रायोगिक ग्रन्थ के रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है।

'श्रावक आराधना' केवल जैन श्रावक-श्राविकाओं के लिए ही उपयोगी नहीं है, अनेक क्षत्रिय, सिक्ख तथा सनातनधर्मी लोगों ने भी श्रावक आराधना पढ़कर यही कहा कि अपने जीवन को सभी निर्मल-उज्ज्वल बनाना चाहते हैं। यह एक उत्कृष्ट कृति है जो जात-पांत का भाव मिटाकर सद्भाव, मैत्री और आत्मा के विकास का संदेश देती है।

विगत अनेक शताब्दियों में महामनीषी, ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप के उत्कृष्ट साधक मुनिगण एवं आचार्यो ने आराधना की रचना विभिन्न रूपों में की है। हमारा सौभाग्य है, उसी कड़ी में जयपुर जैन समाज के वरिष्ठ भक्त-कवि साधक-उपासक पूज्य दादा-सा श्रीमान् गुलाबचन्दजी लूनिया का नाम भी जुड़ा और 'श्रावक आराधना' एक स्वाध्याय कृति के रूप में प्रख्यात हो गयी।

साहित्य रचना और ग्रन्थ-प्रकाशन के अभियान में पूज्य दादा-सा के साथ मेरे दादा जी गंगाशहर के श्री हीरालालजी आंचलिया का जुड़ना मणि-कांचन योग सिद्ध हुआ।

उनके द्वारा प्रणीत व प्रकाशित ग्रन्थों में उल्लेखनीय हैः-

१. शिशुहित शिक्षा भाग-१ तथा भाग-२
२. श्रावक आराधना
३. भिक्षुयश रसायण
४. प्रश्नोत्तर तत्त्व-बोध
५. वैराग्य भूषण
६. जिनज्ञान प्रकाश

ये सभी आदि अनेक ग्रन्थ तत्त्व-ज्ञान की शिक्षा के अनमोल ग्रन्थ हैं। जैन-तत्त्व-ज्ञान को घर-घर तक पहुँचाने वाले ज्ञान और विवेक के धनी दोनों श्रावक-श्रेष्ठ के प्रति श्रद्धासह नमन!

श्रावक आराधना

'श्रावक आराधना' की मूल्यवान उपयोगिता का लाभ जन-जन को मिले, जीवन को सरल, आत्मा को उज्ज्वल और अन्तिम अवस्था को श्रेष्ठता प्राप्त हो, इसी उद्देश्य से आराधना को एक समग्र ग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास किया गया है। ग्रन्थ को पूर्णता प्रदान करने में पूज्य गुरुवर आचार्य श्री महाप्रज्ञजी, तत्त्वज्ञ मनीषी युवाचार्य श्री महाश्रमणजी, महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी के प्रेरणादायी संदेश, वरिष्ठ मुनिजन एवं विदुषी साध्वीवृन्द तथा जैन-दर्शन के मनीषी विद्वानों के अध्यात्मपरक लेखों का विशेष योगदान रहा है। हम उन सभी के प्रति श्रद्धावनत हैं।

पूज्या माँ "श्रद्धा की प्रतिमूर्ति" स्व. रेखादेवी लूनिया, मातुश्री "श्रद्धा की प्रतिमूर्ति" जेठीदेवी आंचलिया तथा मौसीजी नारीरत्न श्रीमती समेरी देवीजी आंचलिया के प्रति विशेष रूप से नतमस्तक हूँ, जो आराधना के पथ की जीती-जागती उदाहरण हैं, तथा जो इस कृति को प्रकाश में लाने की प्रेरणा-स्रोत रही हैं। मेरी हार्दिक कामना है कि मैं भी उन्हीं के पद-चिन्हों पर, आध्यात्मिक पथ पर चलती रहूँ तथा लूनिया परिवार का प्रत्येक सदस्य माँ-सा के आदर्श का अनुसरण करे।

बड़ी बहिन श्रीमती चन्द्रा बोथरा जैन आचार, व्यवहार और तत्त्वों की अच्छी जानकार हैं। उनके द्वारा 'श्रावक आराधना' में निहित गूढ़ भावों का सरलीकरण करने से प्रस्तुत ग्रन्थ विशेष उपयोगी बन गया है। उनके श्रम की हार्दिक सराहना! साथ ही श्री महेन्द्रजी जैन के प्रति भी विशेष आभार जिनके सम्पादन स्पर्श और हिन्दी भाषान्तर से ग्रन्थ की गरिमा आशातीत बढ़ गयी है।

'आराधना' एक गेय कृति है। इसकी गीतिकाओं में राजस्थान की माटी की लय और संगीत जुड़े हैं। हमारा विनम्र प्रयास है कि 'श्रावक आराधना' की गीतिकाओं की संगीतमय प्रस्तुति भी एक सी.डी. के माध्यम से आपके हाथों में शीघ्र पहुँचे।

पाठकों से विनम्र प्रार्थना है कि वे ग्रन्थ के विषय में अपने मन्तव्य और भावना हम तक अवश्य पहुँचाएँ।

– रत्ना लूनिया